विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय

रूपम कुमारी, वर्ग-दशम्, विषय-हिन्दी

दिनांक- २८ / ५/ २०

// अध्ययन-सामग्री //

जीवन -मंत्र :

"सांसों का रुक जाना ही मृत्यु नहीं है । वह व्यक्ति भी मरा हुआ ही है ,जिसने गलत को गलत कहने की हिम्मत खो दी है" ।.

एक बार सच बोल के देखें – आपको महसूस होगा कि आप अपनी आत्मा के इतने करीब होंगे कि ईश्वर के समीप होने अहसास जागृत होगा जो आनंद और विश्वास से भरी होगा ।

वार्त्तालाप: कल की कक्षा में प्रदत्त प्रश्नावली को आपने निश्चित ही बना लिया होगा । आप हर प्रश्नाभ्यास को हल करें ताकि हर पाठ पर आपकी पकड़ मजबूत हो .....

आज फिर 'माता का अँचल पाठ के शेष प्रश्नों को लेकर उपस्थित हैं ---

रोचक तथ्य :

28 मई 1883 को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रिम पंक्ति के सेनानी और प्रखर राष्ट्रवादी नेता विनायक दामोदर सावरकर का जन्म हुआ था ।

प्रश्न-अभ्यास :

-
- ***पाठ पढ़ते- पढ़ते आपको भी अपने माता-पिता का लाड -प्यार याद आ रहा होगा अपनी इन भावनाओं को डायरी में अंकित करें।***
- ***यहां माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य प्रकट हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।***
- ***बच्चे माता- पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं ?***
- ***इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है ?***
- ***फणीश्वर नाथ रेणु और नागार्जुन की आंचलिक रचनाओं को पढ़ने का प्रयास करें***

- ***पाठ से कम से कम 50 देशज शब्दों को चुनकर लिखिए***
- ***लेखक किस घटना को याद कर कहते हैं कि वैसा घोड़मुँहा आदमी हमने कभी नहीं देखा ?बच्चों के द्वारा बनाए गए घरौंदे का वर्णन कीजिए ।***
- ***बच्चे सरल, निर्दोष और मस्त होते हैं 'माता का अंचल 'पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए ।***
- ***पाठ के आधार पर लिखें कि मां के द्वारा लेखक का कन्हैया का रूप देने के लिए किन-किन चीजों से सजाया जाता था ?***
-
- ***सख्त हिदायत दी जाती है कि प्रदत्त - सामग्री को अनदेखा न करें ।.***

जीवन अनमोल है ,इसे हरसंभव बचाने की कोशिश करें । सतर्कता ही एक मात्र उपाय है ...